प्रातःक्लास पिताश्री ओमशांति मधुबन 30–7–67

रिकार्ड– आज सवेरे में है। यह गीत है भक्ति मार्ग का। गाया भी जाता है भक्तिमार्ग में। कहते हैं हम अंधेरे में हैं। अब ज्ञान का तीसरा नेत्र दो। ज्ञान मांगते हैं ज्ञान सागर से। तो बाकी है अज्ञान। भक्ति को अज्ञान कहा जाता है। फिर जब कलियुग का अंत होता हैं तब कहा जाता है अज्ञान के नींद में सोये हुए कुम्भकर्ण। तुम चित्र भी दिखाते हो। बाप ने समझाया है यह भक्तिमार्ग है दुबन मार्ग। .....(मृगतृष्णा) का पानी कहते हैं। पानी होता नहीं। सफेद जमीन देख जनावर इसको पानी समझ जाते हैं। दुबन में फिर ऐसे फंस मरते हैं। फिर निकलना ही मुश्किल हो जाता। तो यह भक्तिमार्ग भी है दुबन। मनुष्य जब गले तब डूब जाते हैं तब बाप आते हैं भक्तिमार्ग के दुबन से निकालने। सिवाय ज्ञान सागर बाप के...और कोई निकाल न सके। बाप कहते हैं ज्ञान तो बिल्कुल ही सिम्पल है। भक्ति मार्ग में कितने वेद–शास्त्र आदि पढ़ते हैं। हठयोग करते हैं। बाप कहते हैं इन भक्ति मार्ग के गुरू लोग को छोड़ना पड़ता है ;क्योंकि वो कब राजयोग सिखलाय न सके। राजाई तो बाप ही देंगे। मनुष्य मनुष्य को दे न सके। भक्तिमार्ग में मनुष्य अल्पकाल लिए राजाई प्राप्त कर सकते हैं ;परंतु इसके लिए ही सन्यासी भी कहते हैं कागविष्टा समान सुख है ;क्योंकि मनुष्यों को विष्टा खाने में सुख लगता है। इसलिए सन्यासियों ने यह नाम रखा है। खुद घर–बार छोड़ भागते हैं। ऐसे सन्यासियों को न गुरू करना चाहिए, न उनका मंत्र याद करना चाहिए। यह ज्ञान सिवाय ज्ञान सागर बाप के और कोई दे न सके। जन्म जन्मांतर से भक्ति मार्ग में फंसते आये हैं। गुरू सिखलाते ही शास्त्रों की बातें हैं। इन दुबन से निकालने में कितनी मेहनत लगती है। समझाना होता है यह राजयोग बाप भगवान ही सिखलाते हैं। मनुष्य मनुष्य को पावन बनाय न सके। पतित–पावन एक बाप ही है। मनुष्य भक्ति मार्ग में कितना फंसे हुए हैं। गंगा स्नान करने जाते हैं। ऐसे भी नहीं जरूर गंगा में स्नान करते हैं। जहां भी पानी का तालाब देखेंगे तो इसको पतित–पावन समझते हैं। यहां भी गउ मुख है। झरने से पानी आता है। जैसे कुंआ में पानी आता है तो उसको पतित–पावनी थोड़े ही कहेंगे। मनुष्य समझते हैं यह भी तीर्थ है। बहुत मनुष्य भावना से जाय वहां स्नान आदि करते हैं। कितनी एडल्टेशन और करप्शन है। वहां फिर दक्षिणा भी लेते हैं। सबसे करप्शन ,एडल्टेशन तो आजकल के विद्वानों आदि में है। प्राइममिनिस्टर,प्रजिडेंट आदि सबके यह गुरू हैं जो नम्बरवन एडल्टेड हैं। इसलिए अर्जुन को भी कहा जाता है इन गुरूओं को छोड़ो। किसने कहा?बाप ने ,न कि कृष्ण ने। ज्ञान का सागर परमपिता परमात्मा है। कृष्ण का नाम डालने से गीता ही झूठी हो जाती है। सौ परसेंट झूठा कह सकते हैं। यह तो बिल्कुल बेकायदे है। बाप के बायोग्राफी में बच्चे का नाम डालना। तुम बच्चों को अभी यह ज्ञान मिला है। तुम बतलाते हो तो भी बनते नहीं। तुमको दुर्गति में पहुंचाया है। अब इन सब बातों का मनुष्यों को कैसे पता पड़ता है। इसलिए बाबा कहते हैं ऐसे2 प्वाइंट लिखकर एरोप्लेन द्वारा गिराओ। जैसे आजकल कहते हैं विश्व में शांति कैसे हो। कोई ने राय दी तो उनको इनाम मिलते रहते हैं। अब वे शांति तो स्थापन कर नहीं सकते। शांति है कहां। झूठी प्राइज देते रहते। अब तुम जानते हो विश्व में तो शांति होती है लड़ाई के बाद। यह लड़ाई तो कोई भी समय लग सकती है। ऐसी तैयारी है। सिर्फ तुम बच्चों की ही देरी है। जब तुम बच्चे कर्मातीत अवस्था को पाओ। इसमें ही मेहनत है। बाप कहते हैं मामेकम् याद करो और गृहस्थ व्यवहार में रहते कमल फूल समान पवित्र बनो और सृष्टि की आदि,मध्य,अंत का ज्ञान सिमरण करते रहो। तुम लिख भी सकते हो इस लड़ाई बाद ड्रामाअनुसार कल्प पहले मुआफिक विश्व में शांति स्थापन हो जावेगी। फिर भी मनुष्य समझेंगे नहीं ;क्योंकि पत्थरबुद्धि हैं ना। यह नहीं समझते विश्व में शांति तो सतयुग में ही होती है। यहां जरूर अशांति रहेगी। तुम्हारी बातों पर विश्वास करेंगे नहीं ;क्योंकि उनको स्वर्ग में आना ही नहीं तो श्रीमत पर चलेगा ही नहीं। यहां भी बहुत हैं जो श्रीमत पर पवित्र नहीं रह सकते हैं। उंच ते उंच भगवान की तुमको मत मिलती है। कोई की चलन अच्छी नहीं होती है तो कहते हैं ना ईश्वर तुमको

अच्छी मत दे। अभी तुमको ईश्वरीय मत पर चलना चाहिए। बाप कहते हैं तुमने विषय सागर में गोते खाये हैं। बच्चों से ही बात करते हैं। बच्चों को ही बाप सुधारेंगे ना। सारी दुनियां को कैसे सुधारेंगे?बाहर वालों को कहेंगे बच्चों से समझो। बाप बाहर वालों से बात नहीं कर सकते। बाप को बच्चे ही प्यारे लगते हैं। सौतेले थोड़े ही प्यारे लगेंगे। लौकिक बाप भी सपूत बच्चों को ही धन देंगे। सब बच्चे समान थोड़े ही होंगे। बाप भी कहते हैं जो मेरे बनते हैं मैं उनको ही वर्सा देता हूँ। जो मेरे नहीं बनते वह .....कर नहीं सकेंगे। श्रीमत पर चल नहीं सकेंगे। वह है भक्ति। तुम किसको कहते हो ज्ञान एक बाप ही देते हैं। तो भी बिगड़ पड़ते। शंकराचार्य को भी बच्चों न कहा ज्ञान सागर एक ही बाप है। वह कहते हैं यह शास्त्र पढ़ने से मेरे साथ कोई मिल न सके। तो झट कहा यह झूठी बात है। शास्त्रों बिगर तो हम रह नहीं सकते। तो पुजारी ठहरे ना। इनको फिर पूज्य कैसे कह सकते। उनकी चरणों पर कैसे पर(पड़) सकते। तुम उनको नमस्ते करो तो रिटर्न में नमस्ते भी नहीं करेंगे ;क्योंकि अपना घमण्ड बहुत रहता है। समझते हैं हम पवित्र हैं, यह अपवित्र हैं। इनको हम नमस्ते कैसे करें?बाबा के बहुत देखे हुए हैं। कोई बड़ा सन्यासी आता है तो बहुत उन्हों के फालोवर्स होते हैं। पण्डे इकट्ठे करते हैं। अपनी2 ताकत अनुसार .....निकालते हैं। यहां बाप तो ऐसे नहीं कहेंगे पण्डे इकट्ठे करो। नहीं। यह तो जो बीज बोवेगा 21जन्म लिए जमा होगा। मनुष्य दान करते हैं तो समझते हैं हम ईश्वर अर्थ करते हैं ईश्वर समर्पण नमः। वा तो कहेंगे कृष्ण समर्पण। बस। कृष्ण का नाम क्यों लेते हैं ;क्योंकि कृष्ण को गीता का भगवान समझते हैं। श्रीराम समर्पण भी नहीं कहेंगे। ईश्वर या कृष्ण समर्पणम् कहते हैं। जानते हैं फल देने वाला ईश्वर ही है। कोई साहुकार घर में जन्म लेते हैं तो कहते हैं ना आगे जन्म बहुत दान—पुण्य किये हैं। अब यह बना है। राजा भी बन सकते हैं ;परंतु वह है अल्पकाल कागविष्टा समान सुख। राजाओं को भी सन्यासी लोग सन्यास कराते हैं। उनको कहते हैं स्त्री तो सर्पिणी है। अगर वह सर्पिणी है तो पहले सर्प तो खुद है ना। इसलिए द्रौपदी ने भी पुकारा है। दुःशासन मुझे नगन करते हैं। अभी भी अबलायें कितना पुकारती हैं हमारी लाज रखो। बाबा हमको बहुत मारते हैं। कहते हैं विख दो नहीं तो खून करता हूं। छूरे मारता हूँ। नंगन कर बाहर भी निकाल देते हैं। अब किसको रिपोर्ट करें?सभी हैं दुःशासन। कितनी पुकार करती हैं। बाबा इस सर्पों से हमको बचाओ। बंधन से छुड़ाओ। बाप कहते हैं बंधन तो खलास होनी ही है। फिर 21जन्म कब नंगन नहीं होंगे। वहां विकार होता नहीं। इस मृत्युलोक में यह अंतिम जन्म है। यह है ही विषियस वर्ल्ड। दूसरी बात बाप समझाते हैं। मनुष्य कितने अनारी (अनाड़ी) हैं। जब कोई मरता है तो कहते हैं स्वर्ग पधारा। अरे,स्वर्ग है कहां?यह तो नर्क है ना। स्वर्गवासी हुआ तो जरूर नर्क में था ;परंतु किसको सीधा कहो तुम नर्कवासी हो तो क्रोध में आए बिगर (बिगड़) पड़ेंगे। ऐसे2 को तुमको लिखना चाहिए। फलाना स्वर्गवासी हुआ तो इसका मतलब तुम नर्कवासी हो ना। हम तुमको ऐसी युक्ति बतावें जो तुम सच2 स्वर्ग में जाओ। यह पुरानी दुनियां तो अब खतम होनी है। अखबार में निकालो। विश्व की शांति लिए भी बताओ। इस लड़ाई के बाद में शांति होनी है 5000वर्ष पहले मुआफिक। वहां एक ही आदि सनातन देवी देवता धर्म था। वह लोग फिर कहते वहां भी कंस ,जरासिंधी आदि असुर थे। त्रेता में रावण था। अब इन शास्त्रों वों से कौन माथा मारे?ज्ञान और भक्ति में रात—दिन का फर्क है। इतनी सहज बात थी। किसकी बुद्धि में मुश्किल बैठती है। तो ऐसे2 सलोगन बनानी चाहिए। इस लड़ाई के बाद विश्व में शांति होती है। यह भी तुम लिख सकते हो। गीता में भूल करने से ही भारत का यह हाल हुआ है। पूरे 84जन्म लेने वाला श्रीकृष्ण का नाम डाल दिया है। श्री नारायण का भी नहीं डाला है। उनकी फिर भी कुछ दिन कम कहेंगे ना। कृष्ण के तो पूरे 84जन्म होते हैं।

शिवबाबा आते हैं बच्चों को हीरे जैसा बनाने। तो उनके लिए फिर डबली भी ऐसी होनी चाहिए। इनमें बाप ने प्रवेश किया आकर। अब यह सोने का कैसे बने?तो फट से इनको सा. कराया। तुम तो विश्व का मालिक बनते हो। अब मामेकम् याद करो। पवित्र बनो। झट पवित्र होने लग पड़े। पवित्र बनने बिगर तो ज्ञान की धारणा हो न सके। शेर का दूध लिए सोने का बर्तन चाहिए। यह ज्ञान तो है परमपिता परमात्मा का। इसको धारण करने लिए भी सोने का बर्तन चाहिए। पवित्रता चाहिए तब धारण हो। पवित्रता की प्रतिज्ञा करके फिर गिर पड़ते हैं तो योग की यात्रा ही खतम हो जाती। ज्ञान भी खतम हो जाता। किसको कह न सके। भगवानुवाच काम महाशत्रु है। उनको तीर लगेगा नहीं। वह फिर कुक्कड़ ज्ञानी हो पड़ते। इसमें देहाभिमान की जरा भी शैतानी न हो। कोई भी विकार न हो। रोज पोतामेल रखो। ऐसे कोई मत समझे कि हम 16कला बन गये हैं। कोई तो 4कला भी नहीं। एक कला भी नहीं है और ही कला बिल्कुल खतम हो गई है। पाप करते रहते। माया बड़ी तीखी है। जैसे बाप सर्वशक्तिवान है वैसे माया भी सर्वशक्तिवान है। आधा कल्प रावण का राज्य चलता है। इन पर जीत बाप बिगर कोई पहनाय न सके। सन्यासी भी जाते हैं गंगा स्नान करने। जहां पानी देखा उसको गंगा समझ जाय स्नान करते हैं। झूठ तो झूठ सच की रत्ती नहीं। कब सुधर नहीं सकते। ड्रामा अनुसार रावण राज्य भी होना ही है। भारत की हार—जीत पर यह ड्रामा बना हुआ है। यह बाप तुम बच्चों को ही समझाते हैं। मुख्य है पवित्र होने की बात। बच्चियां लिखती हैं बाबा हमको जबरदस्ती नंगन करते हैं। बाप को,दोस्तों को ले आते हैं नगन होने मदद करने लिए। सीढ़ी में दिखाया भी है ना ससुर भी लाठी ले आते हैं। इनको विख दो। तो बच्चियां लिखती हैं ऐसी हालत में क्या करें?बाबा कहते हैं जबरदस्ती करते हैं तो तुम्हारे पर पाप नहीं है। तुम तो परबस हो जाती हो। दवाई खिलाकर बेहोश कर भी गंदा बनाय देते हैं। वह (तो) गंदी दुनियां है। गुरू भी खराब कर देते हैं। बच्ची को बाप खराब कर देते हैं। बात मत पूछो। तो अब बाप पवित्र बनाते हैं। बाप कहते हैं मैं पतितों को पावन बनाता हूँ। बाकी शास्त्रों में पांडव और कौरव की लड़ाई ,जुआ आदि बैठ दिखाई है। ऐसी बात हो कैसे सकती?राजयोग की पढ़ाई कोई ऐसी होती है क्या?युद्ध के मैदान में पाठशाला होती है क्या?सौ परसेंट झूठ। कहां उंच ते उंच शिवबाबा ,कहां पूरे 84जन्म लेने वाला श्रीकृष्ण। जिसके ही बहुत जन्मों के अंत में फिर बाप आय प्रवेश करते हैं। कितना क्लीयर है ;परंतु पत्थर बुद्धि बड़ी मुश्किल समझते हैं। समझने वाला (वाले) झट समझ जाते हैं और बाप से वर्सा लेने की कोशिश करते हैं। गृहस्थ व्यवहार में रहते पवित्र भी बनता है। सन्यासी लोग कहते हैं दोनों इकट्ठे रहते पवित्र रहें यह हो नहीं सकता। अरे, तुमको कोई प्रापर्टी ही नहीं तो कैसे रह सकेंगे?यहां तो बहुत भारी प्रॉपर्टी है। पवित्र बनने से विश्व की बादशाही मिलती है। कितनी आमदनी है। बाप ने कितनी सहज बताई है। बेहद का बाप। कहते हैं मेरे खातिर कुल की लज्जा रखो। दाढ़ी तो उनको है ना। शिवबाबा कहते हैं इनकी दाढ़ी की लज्जा रखो। यह एक अंतिम जन्म पवित्र बनो तो तुम स्वर्ग के मालिक बन जावेंगे। अपने लिए ही मेहनत करनी है। दूसरा कोई स्वर्ग में आय न सके। तुम ब्राह्मण ही आये बाप से नालेज लेते हो। यह राजधानी स्थापन हो रही है। उसमें तो सभी चाहिए ना। वहां वजीर आदि होता ही नहीं। राजाओं में अपनी ताकत रहती है। राय लेने की दरकार नहीं। पतित राजायें राय लेते हैं। राजा को एक वजीर होता है। यहां तो देखो कितने वजीर (मिनिस्टर) हैं। पाई—पैसे की बात पर आपस में ही लड़ते—झगड़ते रहते हैं। बाप सभी झंझटों से छुड़ाय देते हैं। 3000वर्ष फिर कोई लड़ाई नहीं होगी। कोई जेल नहीं रहेगा। कोर्ट आदि कुछ नहीं होगा। वहां तो सुख ही सुख है। अब इसके लिए पुरुषार्थ करना है। मौत सिर पर खड़ी है। याद की यात्रा से विकर्माजीत बनना है। तुम ही मैसेंजर हो। सत बाप का मैसेज देते हो कि मनमनाभव। बाकी तो सभी भक्तिमार्ग के गुरू हैं। धर्म स्थापन करने वाले को गुरू कहना नम्बरवन नालायकी है। ओम।